नई दिल्ली
अंक – 146

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई आक : 34-35
मई : 2016

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

आचार मायने क्या?

गुरूबंधुभगिनियों से

अंग्रेजी में 'आचार' की व्याख्या यानी **'माय फेशन इज माय कंफर्ट।'** इसका अर्थ यह है कि जिसमें आपके खुद के लिए सुविधा है जो आसान है और जिसमें आप यथायोग्य उठबैठ सकते हैं ऐसी फैशन का आचरण। इसलिए केश, कपड़े इनका फैशन अनुकरण के तौर पर नहीं करना चाहिए।

दिल्ली, देहरादून, ऋषिकेश, इत्यादि जगह देखिए वहाँ के भक्तिमार्ग या गुरुमार्ग में क्याक्या स्वांग होते है। जैसे कि लंबी दाढ़ी, रूद्राक्षमाला, केसरी परिधान(वस्त्र), इत्यादि। **जब तक आपने 'दादा' यह व्यक्ति देखा नहीं था तब तक गुरु कहने से आपके मनःचक्षु के सामने कोई कफनी वाला व्यक्ति ही दिखाई देता था ना?** फिर मुझे पैंट और शर्ट में देखने के बाद आपको क्या लगा? शर्टपैंट पहनने से इस मार्ग को न्यूनता या दूषण आता है ऐसा नहीं है या मार्ग का अधिक अच्छी तरह से परिचय होता है ऐसा भी नहीं है? अधिक अच्छा परिचय मायने क्या? तो मुंबई में कव्वाली या मुशायरे आदि कार्यक्रम होते है। यहाँ के मौलवी दाढ़ी बढ़ाकर बैठे होते है। बाजु में औरतें बैठीं हुई होती है। उनमें से किसी औरत की ओर संकेत करके दिखाना कि मैं कैसा हूँ, यह आचार का एक भाग है।

इसी तरह इस मार्ग में है इसलिए गले से नाभि तक रूद्राक्ष माला धारण करना या हर रोज का जाप करते समय गले में माला पहनना यह आचार का दृश्य प्रतीक है। अन्य समय इन्हें अपनी लंगोटी का भी भान नहीं रहता है। इसी तरह उरूस आते ही कपड़े, टोपी, आदि पहनकर रौब जताते है जैसे कि प.पू. हाजीबाबा के शागीर्द पहाड़ से

अवतीर्ण हुए है और टोपी ऐसी कि अभीअभी नमाज़ पढ़कर मस्जिद में से बाहर आए है। मतलब यह क्या प्रकार है? **परन्तु अपने गुरुमार्ग में आचार यह जो व्यक्त अवस्था है वह अनुकरण अवस्था नहीं है और अपने जीवन में, आचरण में वस्त्र इसलिए विचारों में लेने है कि वह लज्जारक्षण का माध्यम है।**

'आचार' किसे कहते है? आचार का गणित इस प्रकार है –

1) आहार	2) विचार	3) आचार
25%	**25%**	**50%**

अब आपका आहार जितना शुद्ध होता है उतने विचार शुद्ध होते है और जितने विचार शुद्ध होते हैं उतना आचरण शुद्ध होता है। आहार 25% और विचार 25% मिलाकर 50% होता है और आहार व विचार इन दो क्रियाओं का पूर्णत्व हुआ है यह व्यक्त होने के लिए 50% आचरण है। मतलब

आहार + विचार	=	**आचार**
आफ्टर फुल डेव्हलपमेंट ऑफ दीज टू	––	दॅट इज लास्ट ऑर फायनल स्टेज
इन दो अवस्थाओं का परिपूर्णत्व होने के बाद	––	उसका परिणाम आचार रूप में व्यक्त होता है।

इससे क्या अनुभव होता है?तो **'आचार'** शुद्ध होना आवश्यक है। मतलब मैं (वं. दादाजी) जब आपके घर आता हूँ तब आप अपनी पत्नी को मेरे लिए चाय बनाने के लिए कैसे कहते हो और अन्य समय कैसे कहते हो?अन्य समय आप अपनी पत्नी को कहते हो?''अरे, तुम क्या अभी तक सो रही हो? पहले मेरे लिए चाय बनाओ, कब से चिल्ला रहा हूँ।'' है ना?तो यह आचार में फर्क है और **शुद्ध आचार होने के लिए 'आहार' शुद्ध होना आवश्यक है।**

इसी संबंध में यह मान लीजिए कि आप कार में बैठकर जा रहे हो। यदि पेट्रोल में कचड़ा होगा तो कार्बोरेटर फट्फट् की आवाज करता है और कार को झटके (धक्का) लगते है और मोटर में बैठे लोगों को भी झटके लगते है। इसी तरह आपकी पंचकर्मेंद्रियाँ, पंचज्ञानेंद्रियाँ, पंचप्राणकोष, बुद्धि, मन, चित्त, अहंआकार इन 19 माध्यमों की गाड़ी को अगर अशुद्ध आहार मिला तो इन 19 माध्यमों को झटके (धक्का) लगते है। फिर आहार अशुद्ध इसलिए विचार अशुद्ध और फिर आचरण अनुशासन रहित होता है।

आप कुछ प्रसंग के अनुसार ही होटल में जाते हो, हर रोज नहीं जाते हो या हर रोज आपके पड़ोसी भी आपको खाना खाने के लिए नहीं बुलाते है। जब कभी आपकी पत्नी गाँव चली गई है और आप खुद अपने लिए खाना नहीं बना सकते हो परन्तु ऐसे समय भी आपके पड़ोसी आपको खाना खाने के लिए नहीं बुलाते, ऐसा क्यों होता है? **तो आप बहुत खाना खाते हो इसलिए, यानी आप बकासूर या भस्मासूर जैसे हो इसलिए। जिस दिन आप करपात्री होंगे यानी अपनी दो हाथों की अंजुली में जितना खाना समा सकता है उतना ही खाना खाने लगोगे और उतने खाने में ही पेट भरने की आदत आपको लगेगी तब आपको खुद को खाना बनाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी क्योंकि तब आपको कोई भी खाना खाने के लिए बुलाऐगा।** परन्तु अगर आपको अकेले को ही गाड़ी भरकर खाना लगता होगा तो उतना खाना आपको कौन देगा? मुझे (वं. दादाजी को) सब

लोग खाने पर बुलाते है तो मेरे पास समय नहीं है और आपके पास बहुत समय है परन्तु आपको खाना खाने के लिए कोई नहीं बुलाता, यह फर्क क्यों है?इसका विचार कीजिए।

अब तक आपको बताए गए विषय का सारांश यह है कि आज आपमें ये दीक्षाऐं बीज रूप में धारण कर दी है और उस बीज में 'गुरुतत्व' शक्तिस्वरूप में समाया हुआ है। आपने वह बीज अपने देहिक माध्यम में यानी **कायावाचामन** में धारण करने के बाद उसकी यथायोग्य देखभाल करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी **आहारविचारआचारपरत्वे कैसे निभानी है यह भी आपको बताया है।**

दत्तपंथ, नाथपंथ, सूफीपंथ

आप भक्तों के कल्याणार्थ इस गुरुमार्ग की कार्ययोजना है और यह आपके अनुभवपरत्वे चल रही है। परन्तु इसका मूल सूत्रधार कौन है?

(1)	(2)	(3)
दत्तपंथ	**नाथपंथ**	**सूफीपंथ**
बीज	**आकार**	**साकार**

इन तीनों पंथों का धर्म क्या है, कर्म क्या है, तथा मर्म क्या है?इस गुरुमार्ग के बाहर के जगत में भी इन पंथों के बारे में लिखा हुआ कुछ साहित्य आज प्रचलित है। तो भी इन तीनों पंथों की अनुभवसिद्ध अवस्थाओं को जिस सिद्ध पुरूष (वं. दादाजी) ने अपने देहिक माध्यम द्वारा अनुभव किया होगा वही केवल इन तीनों पंथों में जो तत्वज्ञान अंतर्भूत है उसका अविष्कार साधक अवस्था के साधक के सामने व्यक्त कर सकता है।

दत्तनाथसूफी इन तीनों पंथों का सारांश मतलब **''मानवीय जीवन का विकास तथा मानवीय जीवन का कल्याण करना''** यह है। परन्तु इन तीनों पंथों का 'धर्म' क्या है?तो इनका 'धर्म' इस प्रकार है –

1) <u>दत्त पंथ</u> – 'दत्त' यह एक शब्द है परन्तु 'दत्त' किसे कहते है? तो 'जो हमारी साद (आवाज, पुकार) को तुरंत प्रतिसाद देता है वह दत्त है।' जैसे अचानक कोई व्यक्ति किसी सभा में मदद के लिए आया तो उन्हें यह कहा जाता है, ''अरे, तुम तो दत्त करके यहाँ पहुँचे हो!'' तो यहाँ जो 'दत्त' कहा गया है वह दैवत ना होकर तत्व है जो **हमारी साद को तुरंत 'प्रतिसाद' देता है यानी 'ॐकार'।**

2) <u>नाथ पंथ</u> – जिन व्यक्ति माध्यमों को जन्मप्राप्ति के बाद, 'हम जन्म लेकर इस जगत में क्यों आए है, हमारे जन्म का कारण क्या है तथा हमारे जन्म का सार्थक किसमें है?' यह अज्ञान और कर्मबंधन के कारण समझ नहीं आता है उन व्यक्तियों के कर्मबंधन का अंधकार दूर करके जो पंथ उन्हें 'सनाथ' करता है वह 'नाथ पंथ' है।

3) <u>सूफी पंथ</u> – यह साकार करने वाला पंथ है। यानी दत्तपंथ का बीज **'दीक्षा रूप'** में उपासक में धारण होने के बाद उस उपासक को नाथपंथ द्वारा **'आकार'** प्राप्त होता है और ऐसे साधक को **'साकार'** करने वाला पंथ **'सूफी पंथ'** है। मतलब दत्त पंथ की दीक्षा लेने के बाद जो साधक खुद को नाथ पंथ में समाता है वह साधक अगर उसे प्राप्त हुई साधना का उपयोग केवल खुद के ही जीवन में करने का विचार करेगा तो उस माध्यम द्वारा 'सूफी पंथ' कार्य नहीं करता या उस साधक को साकार नहीं करता।

मतलब मान लीजिए कि आपको 'गुरुदीक्षा परत्वे' दीक्षारूप में बीज प्राप्त हुआ है उसे नाथपंथ

के कारण 'आकार' प्राप्त हुआ और वह सूफी पंथ के कारण 'साकार' हुआ है। परन्तु अगर आप यह विचार करोगे कि मुझे यह जो कुछ प्राप्त हुआ है वह केवल मैं, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे इन्हीं के लिए प्राप्त हुआ है तथा भविष्य में मेरे घराने की आगे की पीढ़ियों का प्रबंध (तरतूद) करने के लिए ही मैं इस अवस्थाप्रत आया हूँ, यानी आपने केवल इस तरह से विचार किया तो **आपमें दत्त, नाथ, सूफी ये तीनों तत्व कार्यान्वित नहीं होंगे। यह इस गुरुकार्य का तथा इन तीनों पंथों का मर्म है। यहाँ से जो कुछ प्राप्त होगा वह खुद के लिए नहीं है।**

यह गुरुमार्ग अत्यंत आसान मार्ग है परन्तु इसमें कितनी प्रखरता है? यदि आप यह साधन यानी 'बीजआकारसाकार' यह साधन केवल खुद के लिए इस्तेमाल करने की सोचोगे तो इस साधन के लाभ का अनुभव आप नहीं ले सकोगे। आपमें 'बीज' धारण हुआ, उस बीज को 'आकार' प्राप्त हुआ और वह बीज 'साकार' हुआ इन तीनों अवस्थाओं का अनुभव आपको कब होगा?तो जब आप दूसरों के हितार्थ कार्य करोगे तब। ये तीनों अवस्थाऐं आपको प्राप्त होने के बाद आपके देहिक अवस्था में कुछ बदलाव हुआ है ऐसा आपको कभी भी नहीं लगेगा। ये तीनों अवस्थाऐं आपमें धारण होने का प्रतिसाद आपको खुद के माध्यम से नहीं मिलता है। तो इसका अनुभव इस प्रकार होता है – कोई व्यक्ति अपनी पीड़ा, दुख, कष्ट लेकर आपके पास आता है और आप काला धागा उस व्यक्ति के गले में बाँधते हो। वह काला धागा बाँधने के बाद उस व्यक्ति की पीड़ा, दुख, कष्ट दूर होकर 15 दिनों के बाद वह व्यक्ति आपके पास आकर आपको बताता है कि, 'अब मुझे अच्छा लग रहा है।' उसका वह कहना आप अपने कानों से जब सुनते हो तब **आपको ये तीनों अवस्थाऐं प्राप्त हुई है इसका अनुभव है, यह उन तीनों की निशानी है।**

इसका अर्थ यह है कि बीजधारणाआकारसाकार इस अवस्था में आपकी सिद्धता की परीक्षा आप अपने जीवन में नहीं कर सकते हो। जब आपके जीवन में कोई दुखी जीव आता है और उसके कल्याणार्थ आपको प्राप्त कराये इस **'साधनतत्व' या 'साधनसंपत्ती'** का उपयोग आप करते हो तब आपको प्राप्त कराये इस साधनतत्व का यानी साधनसंपत्ती का कितना विकास हुआ है यह आप समझ पाओगे। इसके बारे में आपने मुझे पूछा तो वह मैं आपको नहीं बता पाऊँगा और आपने खुद को पूछा तो भी वह आप समझ नहीं पाओगे। मैं इस संबंध में आपको यह बताऊँगा कि, ''आप कल सुबह स्नान करके कार्यकेंद्र पर आईये। प.पू. बाबा के सामने बैठिये और तब जो 1–2 व्यक्ति अपना दुख आपको बतायेंगे तो वह सुनिये। वह सुनकर आपने यह दक्षता लेनी है कि उस दुख में आपने खुद डूबना नहीं है और उन्हें **सद्गुरुकृपा का धागा या श्रीफल देना है।** कुछ दिनों बाद जब वह व्यक्ति आपके पास आकर आपको यह बताएगा कि उसका जो कुछ काम था वह हो गया है तो **यह किसकी साक्ष (गवाह) है?** तो **'बीजआकारसाकार'** ये तीनों तत्व आपको प्राप्त हुए है इसकी गवाही है।'' इसके बजाए अपनी साधना का श्रेष्ठत्व तथा उसकी आपको प्राप्त हुई योग्य–अयोग्य अवस्था इसका अनुमान यदि आप अपने अंत तक निकालते रहोगे तो भी इसका अनुमान आप निकाल नहीं सकोगे।

हम कैसे दिखते है यह समझने के लिए यानी अपना चेहरा देखने के लिए आपको नित्य आईना लगता है तब अपना 'मुखकमल' कैसा है यह आपको समझता है। परन्तु 'गुरुमार्ग' का यह साधन खुद को कहाँ तक प्राप्त हुआ है इसका अनुमान आपने केवल कपड़े बदलने से (यानी पीला, सफेद, केसरी आदि परिधान धारण करने से) समझ नहीं आता तो जब किसी दुखी जीवन को आपसे कुछ आधार प्राप्त होता है और उन व्यक्तिमाध्यमों में संतोष निर्माण होता है और वह आप सुनते हो तब यह बीज–आकार–साकार यह अवस्था आपको प्राप्त हुई है ऐसा कह सकते हैं। **ऐसा यह 'मर्म' आपको**

बताया है कि यह साधना खुद के प्रित्यर्थ फलद्रुप नहीं होगी। मेरे इस कहने पर आप पूछोगे कि फिर ये साधना किसलिए करनी है?और खुद के प्रित्यर्थ 'साधन' मायने क्या है?

तो हमेशा यह कहा जाता है कि ''ठेविले अनंते तैसेचि रहावे'', **'परमेश्वर ने जैसे रखा है वैसे रहना चाहिए' मतलब प्राप्त परिस्थिति में समाधानी रहना चाहिए। 'परमेश्वर ने जैसे रखा है उसी में कितना सुख है यह नहीं समझने के कारण क्या होता है? तो 'अती आशा, दुराशा।'** इसके अनुसार आप लोभ के वश में आकर कोई लॉटरी का टिकट लगता है क्या? यह विचार करके अधिक पैसे कमाने के लिए कुछ प्रयत्न करते हो परन्तु वे प्रयत्न निष्फल होते है, उनसे कोई लाभ नहीं होता है। इसका उदाहरण मतलब कुछ दिन पहले कुछ गुरुभक्तों ने महाराष्ट्र राज्य लॉटरी के 25 टिकटस् निकालकर वे एक लिफाफे में बंद करके एक औरत के पास दिए। फिर वह औरत लिफाफा लेकर कामकाज में मेरे (वं. दादाजी के) पास आई और उसने कहा कि इसे लोबान करके आशीर्वाद दीजिए। तब मैंने उसे कहा कि ऐसे काम मैं नहीं करता। उस औरत ने लॉटरी के टिकटस् छुपाकर लाए थे और उसकी यह कल्पना थी कि मैं तुरंत लोभान करके उसे दूँगा परन्तु मैं उतना अंधा थोडे ही हूँ? यहाँ की दुआ से उन्हें पैसे प्राप्त होंगे और उसमें से कुछ पैसे वे मुझे देंगे ये व्यर्थ प्रयत्न क्यों करने है?और इसी अर्थ से मैंने आपको बताया है कि **यह साधना खुद के उपयोगार्थ (ऐहिक लाभ) नहीं है और यह बीज-आकार-साकार अवस्था का 'मर्म' है।**

धर्म– दत्त, नाथ, सूफी इन तीनों पंथों का धर्म क्या है? तो **'मानव कल्याण।'** इस अवस्था की अनुभूति या प्रचिती कब होगी?जब इसका लाभ दूसरों को कराओगे तब। इसका अर्थ यह नहीं है कि यहाँ उपस्थित प्रत्येक गुरुभक्त के घर में केंद्र स्थापित करना है। तो इसका अर्थ इस प्रकार है– साधारणतः घर में बच्चे होते है, अन्य व्यक्ति होते है। जब बीमारी आती है या सिरदर्द होता है तब बहन ने या भाई ने सिर दबाने से अच्छा लगता है। इसका अर्थ क्या है? तो **प्रत्येक मनुष्य बाय बर्थ (जन्मतः) मिडियम (माध्यम) होता है** वरना आपका कर्म आपमें धारण होकर प्रवाहित नहीं होता। इसी का अर्थ यह है कि एव्हरी ह्यूमन बिईंग इज ए मिडियम बाय बर्थ। इसके अनुसार 5 प्रकार के मिडियम होते है यह आपको पहले ही बताया है।

1) हीलिंग	स्पर्श संवेदना
2) ट्रान्स	विभूतियों का संचार होना
3) क्लेअर ऑडियन्स	अड़चनों के संबंध में
4) क्लेअर व्हॉयन्स	मार्गदर्शन करने की सिद्धता
5) ऑटोमेटिक	

इनमें से **'हीलिंग या स्पर्ष संवेदना' यह गुणधर्म जन्मतः प्रत्येक व्यक्ति में होता है।** इसलिए जब परिवार में किसी को कष्ट होता था तो आप दूसरे का सिर दबाते थे। अब आप इस मार्ग में हो तो अब आपने एक विशिष्ठ पद्धति से स्पर्श करके उसके लाभ का अनुभव करना है और उस व्यक्ति को पूछना है कि कैसे लग रहा है? मतलब आप का पहला गुणधर्म हीलिंग या स्पर्श संवेदना इसके अनुसार आपने उस व्यक्ति के शरीर को स्पर्श करने के बाद आप में साकार हुई उपासना आपके हाथों में से उस व्यक्ति माध्यम में जाकर उसे ठीक करती है।

इससे संबंधित दूसरी बात यह है कि आप चाँदी या स्टील की प्याली लीजिए। उसमें तर्जनी आधी डूबेगी उतना पानी लीजिए। फिर उसमें उँगली रखकर आपके मन में 11 या 21 जितना भी संकल्प

आएगा उतनी संख्या में सद्गुरु नामस्मरण करके फिर वह तीर्थ जिसकी तबियत (सेहत) ठीक नहीं होगी उसे दीजिए। फिर उसकी बिमारी में आए फर्क का अनुभव कीजिए।

ऊपर बताई इन दो बातों के अनुमान से क्या होगा?तो मनुष्य को बेसमय जो पीड़ा और कष्ट होते है उनसे वे कितना ठीक होते है इसका अनुभव आपको अपने साधन माध्यम द्वारा प्रथमतः अपने घर में हो सकता है। यानी चॅरिटी बिगीन्स ॲट होम मतलब 'गुरुकार्य' का आरंभ अपने खुद के घर से ही करना है। क्योंकि पहले ही चौराहे पर कार्य किया तो उसके बारे में आलोचना हो सकती है। इसलिए अपने माध्यम की सिद्धता का अनुमान घर में औरों को आपसे आने वाले अनुभवों से निकालना है।

पहले ही आपको बताया है कि दत्तपंथ मायने 'बीज' नाथपंथ मायने 'आकार' और अब सूफीपंथ मायने 'साकार' और इन तीनों पंथों का धर्म है 'मानवकल्याण'। अब **मानव कल्याण से क्या बोध होता है?** दत्त, नाथ, सूफी इन पंथों की नींव क्या है?तो **''दिया उसका भला, नही दिया उसका भी भला।''** यानी इन तीनों पंथों का जो धर्म है वह हिंदू, क्रिश्चन, मुस्लिम, इत्यादि जो अनेक धर्म है वैसा ना होकर इन तीनों पंथों का धर्म है **'दया, क्षमा व शांति।'**

दया– अपना खुद का पुत्र प्यारा बेटा है और दूसरे का गधा है। इसी तरह खुद का प्यार प्रामाणिक प्रेम है और दूसरे का प्रेम दिल्लगी (लफड़ा) है, ऐसा क्यों होता है?आपके प्यार को प्रेम कहना और दूसरे के प्यार को दिल्लगी (लफड़ा) कहते हो परन्तु वास्तव में दोनों ही लफड़ेबाज हो। अगर आप दूसरों को लफड़ेबाज कहते हो तो खुद को भी लफड़ेबाज क्यों नहीं कहते हो?खुद के बारे में कहते हो कि हम प्रेमवीर है क्योंकि हमारा प्रेम सच्चा है और दूसरों के प्रेम को लफड़ा कहते हो! तो इसके बजाए हम दोनों भी प्रेमवीर है ऐसा कहिये।

तो अब दया का अर्थ यह है कि **'सर्वाभूति आत्मा एक है' यानी सभी प्राणीमात्रों में एक ही आत्मा है इस सद्भावना से सबकी ओर देखना है।**

क्षमा– यानी क्षम्य (क्षमा करने योग्य)। अपने जीवन में जो अनेक घटनाऐं घटित होती रहती है उन्हें हम कहाँ तक क्षमा करने योग्य मान सकते है? अगर कोई आपका कट्टर दुश्मन है तो भी उसके प्रति आप कितना प्रेम निर्माण कर सकते हो? मान लीजिए कि किसी ने आपको कहा, ''मैं तुम्हें मुँह पर एक थप्पड़ लगाऊँगा'', तो आप उसे कहते हो कि, ''मैं तुम्हें तीन थप्पड़ लगाऊँगा।'' परन्तु इन बातों के लिए **इस तरह से अपना सामर्थ्य एक से तीन गुणा बढ़ाने के लिए आपको सामर्थ्य नहीं दिया है।** आपके जीवन में जो अप्रिय घटना घटित हुई होगी वहाँ 'क्षमा' करनी चाहिए। अब हमेशा घटित हो रही घटनाऐं कहाँ तक क्षम्य माननी है? इस संबंध में यह घटना देखिये – प.पू. मच्छिंद्रनाथजी ने एक स्त्री को पुत्र प्राप्ति के लिए 'संजीवनी' विभूति दी परन्तु उस औरत ने वह विभूति कूड़े में फेंक दी। पुनश्च 12 साल के बाद उसी गाँव में आने के बाद प.पू. मच्छिंद्रनाथजी ने उस स्त्री से पूछा, ''मेरा पुत्र कहाँ है?'' तब उस औरत ने उन्हें बताया कि उन्होंने दी हुई विभूति उसने कूड़े में फेंक दी थी। अब प.पू. मच्छिंद्रनाथजी का सामर्थ्य इतना था कि उन्होंने दी हुई विभूति का जिस औरत ने अनादर किया था उसे वे शाप दे सकते थे। परन्तु वैसा ना करके प.पू. मच्छिंद्रनाथजी ने उस स्त्री को केवल इतना ही कहा, ''माँ जो तुम्हारे नसीब में नहीं था वह तुम्हें कैसे प्राप्त होगा? अब मैं मेरे पुत्र को वापस ले जाता हूँ।'' मतलब उस स्त्री ने इतना घोर (बड़ा) अपराध किया था फिर भी प.पू. मच्छिंद्रनाथजी ने उसे क्षमा किया और कहा कि, ''मैंने तुम्हें दिया था परन्तु वह तुम्हारे नसीब में नहीं था।''

इसका अर्थ यह है कि **जब आपको कोई सामर्थ्य प्राप्त होता है तब उस सामर्थ्य का प्रभाव औरों पर पड़े इसलिए आप शापवाणी का उच्चार करते हो।** तो उसके बजाए आपने उःशापवाणी का उच्चार करना चाहिए कि मेरा बुरा हुआ तो भी कोई हर्ज नहीं परन्तु तुम्हारा भला होने दो।

दत्त, नाथ, सूफी इन तीन पंथों में दया, क्षमा, शांति ये तीन तत्व तुलनात्मक रीति से बद्ध है और यही उनका धर्म है। वे ईश्वर से यही माँगते है कि, ''मैं यह जानता हूँ कि मैं दुखी हूँ परन्तु फिर भी जो मुझसे अधिक दुखी है उन सबको आप पहले दीजिए और बाद में मुझे दीजिए।'' मतलब वे प्रथमतः खुद के लिए कुछ नहीं माँगते है।

आपने जो फोटो पूजा में रखे हैं उनमें से आपको अपने सवालों के जवाब अपनी इच्छानुसार क्यों प्राप्त नहीं होते हैं?इस सवाल का जवाब इस प्रकार है –

आकृति

बाजु की आकृति में दिखाए अनुसार देवता के फोटो के सामने आप बैठे हुए हो। परन्तु यहाँ आप और देवता के बीच आपके प्रापंचिक (घरगृहस्थी) प्रश्नों के विचारों (के वलयों) की लेनदेन चल रही है। **अब उन फोटों में 'देवतत्व या गुरुतत्व' बीजरूप में है वह आपमें धारण होकर आपको 'आकार' और 'साकार' साकार अवस्था प्राप्त होने में आपके प्रापंचिक प्रश्नों के विचारों के वलय रूकावट निर्माण करते है।** इसलिए आप ये प्रापंचिक अड़चनो के विचारों के वलय अपने पीछे रख दो। फिर आपकी देवता का प्रकाश आप पर गिरने से आपके पीछे के आपके प्रापंचिक प्रश्नों के वलय भस्म हो जायेंगे। **राजा गोपीचंद के तो 5 जन्म भस्म किए थे तो फिर क्या आपके ईहजन्म के कर्म श्री सद्‌गुरु भस्म नहीं करेंगे? अवश्य करेंगे** इसलिए आप इस पर विचार कीजिए। आपके सामने का देवता का फोटो और आप इनमें जो आपके प्रापंचिक अड़चनों के विचार वलय रूप में है। उस फोटो में देवतत्व या गुरुतत्व बीजरूप में है परन्तु वह आपमें धारण होकर आपको आकार और साकार अवस्था प्राप्त होने में वे वलय रूकावट निर्माण कर रहे है इसलिए वे वलय आप दूर कीजिए यानी अपने पीछे रखिए।

अपने कार्यकेंद्र के फोटो कैसे प्रसन्न, तेजस्वी, भव्य और सजीव दिखते है। परन्तु आपके घर के फोटो मलिन तथा उदास दिखते हैं। **इसका कारण है आपके प्रापंचिक प्रश्नों के विचारों के वलय।** कार्यकेंद्र पर के फोटो जैसी प्रसन्नता, भव्यता, तेज घर के फोटो में या प्रतीकों में क्यों अंतर्भूत नहीं है?इस सवाल का जवाब इस प्रकार है – **आकाश में सूर्य इतना प्रखर तथा प्रकाशमान होता है परन्तु उसके सामने एक साधारण सा बादल आने के बाद यदि सूरज का प्रभाव कायम है तो भी आप तक केवल उस बादल की छाया ही आती है,** आप तक सूरज का प्रभाव यानी प्रकाश नहीं पहुँच पाता है। इसी तरह आपके विचारों से व्यक्त हो रहा आपके संकटों का ऋणानुबंध खुद के सामने रखकर जब आप पूजनअर्चनादि विधि करने बैठते हो तब आपके संकटों के विचारों का यह बादल **देवदेवता से आप तक आने वाला 'गुरुकृपाशीर्वाद' आपमें धारण होने में रूकावट**

निर्माण करता है।

मतलब देवदेवता असमर्थ नहीं है और आपकी माँग भी अत्यंत मामूली होती है तो भी वह आपको नहीं मिलता है। देवदेवता आपको मोक्ष देने का कार्य भी सहजता से कर सकते है, आपको 'नर से नारायण' कर सकते है, इतनी महान अवस्था आपको सुलभता से देते है, यह सब किसलिए है?तो इसका अर्थ यह है कि आपकी साधना या उपासना द्वारा प्रापंचिक जीवन के लिए पोषक ऐसा कृपाशीर्वाद आपको देने का सामर्थ्य आपकी नित्य पूजा में रखी देवदेवता की प्रतिमाओं में होता है और आपको वह आशीर्वाद देने के लिए वे समर्थ भी होते है। फिर भी वे असमर्थ है, क्यों? तो आपके प्रापंचिक प्रश्नों के विचारों के वलयों के कारण उन्होंने दिया कृपाशीर्वाद आपमें धारण होने में रूकावट निर्माण करता है इसलिए।

इसलिए पूजनअर्चनादि विधि के समय आपने अपने संकटों का विचार करना उचित नहीं है। आप अपने संकटों के निवारणार्थ देवदेवता की आराधना नहीं करते हो। **संपूर्ण दिन भर में आप केवल आधाएक घंटा ही देवदेवताओं की आराधना करते हो** तब आपने अपने संकटों का विचार नहीं करना चाहिए। गाय, भैंस जैसे जुगाली करते है वैसे अपने संकटों की जुगाली के लिए आपको दिन के बाकी बचे हुए 23 घंटे दिए है। वास्तव में 'जुगाली' करने का धर्म केवल जानवरों का ही होता है **परन्तु वह मनुष्य प्राणी में भी होता है यह बात जब मैंने कार्य शुरू किया तब मुझे मालूम हुई!**

जुगाली मायने क्या? तो गाय, भैंस, बकरी, आदि जानवरों को जब वन में छोड़ देते है तब वे बहुत सारी घास एक साथ खा लेते है और बाद में उसे पेट में से वापस मुँह में लाकर चबाते बैठते है। आप तो वैसे प्राणी नहीं हो ना? फिर आप कैसे प्राणी हो? कितने 'पाद' (चरणों के) प्राणी हो?यानी अष्टपाद (8 चरणों के) या चतुष्पाद (4 चरणों के) प्राणी हो?आप तो **'सहस्त्रपाद' (हजार चरणों के) प्राणी हो!** यानी अभी इधर तो बाद में उधर जाने वाले हो। सद्गुरु प्राप्त होने के बाद भी आप अन्य अनेक गुरुओं की दहलीज पर आपादमस्तक रगड़कर आते हो। यानी आप कितने पाद (चरणों के) प्राणी हुए? **जिसे दो ही चरण होंगे उसे 'दो गुरुपादुका' प्राप्त होगी परन्तु जो सहस्त्रपाद (हजार चरणों के) है उन्हें कौन मिलेगा?** भक्तों ने उत्तर दिया ''रावण'' दादाजी ने कहा ''नहीं'', उसे दो ही चरण थे, 10 मुँह थे। इसका अर्थ यह है कि 10 मनुष्यों का सामर्थ्य एक में ही था। पुराणों में जो देवीदेवताओं के चित्र है वे उनके सामर्थ्य की कल्पना के लिए है। वरना 10 मुखों का मनुष्य कभी जन्म लेगा क्या? दो मुखों के बालक का जन्म हुआ तो संपूर्ण हॉस्पिटल हिल जाता है, डॉक्टरों के हाथ पैर भी काँपने लगते है।

इसलिए अब से पूजाअर्चना के समय अपने प्रपंच की अड़चनों का विचार नहीं करना है, ईश्वर के सामने बैठकर उनसे मन्नतें नहीं माँगनी है। पूजाअर्चना होने के बाद ईश्वर को दो ही शब्दों में यह बताना है कि, **''हे भगवान, मुझपर आपकी अखंड कृपा रहने दीजिए'',** बस! इसके बजाए आप बारबार कहते हो कि यह कैसे होगा, वह कैसे होगा? मतलब क्या ईश्वर गूंगे, बहरे है? क्या जगत के सारे व्यंग तथा अपंगत्व ईश्वर में ही है, जो आपको देख, सुन नहीं सकते हैं? **आप यहाँ नीचे हॉल में बाते करते हो और मैं देवदेवता ना होकर भी आपकी बातें मुझे ऊपर सुनाई देती है।** आप इतने फालतू विषयों के बारे में बोलते रहते हो कि जिसका कोई उपयोग नहीं है। परन्तु अब आप 'नाथपंथी' हो। तो क्या आपको यह मालूम है कि प.पू. जालिंदरनाथजी लकड़ी की गठरी अपने सिर के ऊपर परन्तु सिर से थोड़ी दूर रखकर चलते थे। इसका अर्थ क्या है? **तो 'गुरु' इस विषय के अतिरिक्त जगत में जो अन्य अनेक विषय है वे प.पू. जालिंदरनाथजी ने खुद में धारण नहीं होने दिए थे। यह उनका वर्णन करते समय खास करके सूचित किया गया है।** उन्हें 'दीक्षा' देकर 'आकार' व 'साकार' किया गया था। वे जगत के कल्याणार्थ भ्रमण करते थे तब जगत के अनंत विषय उनके पास होते थे परन्तु वे विषय उन्होंने कैसे रखे थे? **तो 'सिर के ऊपर थोड़ी दूरी पर', उन्होंने उन विषयों को खुद में**

धारण नहीं होने दिया था। ऐसे ये नवनाथ है और ऐसा उनके आचरण का अर्थ है। इसके विपरीत आप अंदर और बाहर से पूरी तरह सारे विषयों से पूर्णतः भरे हुए हो। आपके श्री गुरु कहाँ है? तो घर के किसी कमरे के किसी कोने में जैसे कोई खटमल किसी कोने में छुपा हुआ होता है वैसे। मतलब अगर ढूँढो तो किसी कोने में गुरु का फोटो होता है!

आप कहते हो कि विषयों के वलय निर्माण नहीं होते है तो आपको एक अनुभव बताता हूँ, वह आप करके देखिए। एक आईना लीजिए और उस पर सांस छोडिये। सांस द्वारा द्रवरूप में जो गरमी देह से बाहर निकलती है उसका वलय आईने पर दिखाई देता है। **इसी तरह आपके मन और बुद्धि में जो विचारों का मंथन चलता रहता है उसमें से विचार बाहर निकलते रहते है और उन विचारों के वलय निर्माण होते है। आपके इन्हीं विचारों के वलयों के कारण आज इस गुरुमार्ग में आपके कल्याण का पूर्णतः प्रबंध होते हुए भी आप असमर्थ हो। वरना आपका सवाल कितना भी विकट हो, चाहे आपको किसी का एक लाख रूपयों का कर्जा वापस करना हो तो भी एक बार आप यहाँ श्री गुरु की षरण में आने के बाद आपका बेअब्रू होना, आपका जीवन नामषेष होना यह कदापि संभव नहीं है।**

आप जब कामकाज में आते हो तब आपकी समस्या कितनी बड़ी होती है? तो अत्यंत मामूली होती है। परन्तु जिस तरह छोटे बच्चे को जब नया शर्ट चाहिए होता है तब वह क्या करता है? तो पुराने शर्ट में जो छोटा सा छेद होता है उसमें उँगलियाँ डालकर उसे बड़ा करता है और फिर वह अपने पिता को दिखाता है कि देखिए शर्ट कितना फटा हुआ है। क्या उसका शर्ट अचानक ही इतना फट गया? इसी तरह आपके कर्मपरत्वे का आपका प्रश्न कितना था?और उसे बोलबोलकर किसने बड़ा किया?तो आपने ही और अब आप कहते हो कि मुझे कितनी तकलीफ हो रही है? एक बार यह तकलीफ निवारण हो गई कि फिर देवदेवता की भक्ति करूँगा। कितना बड़ा झूठ है यह? एकबार आपकी तकलीफ निवारण हो गई तो क्या वाकई आप भक्ति करोगे? मुमकीन ही नही है। अपना काम होते ही आप यहाँ से भाग जाओगे।

3) शांति – आज आपमें से प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कर्मपरत्वे अड़चनें है जो निवारण करने की आतुरता आप सब में है। परन्तु कितने शांत चित्त से वे अड़चने आप ग्रहण कर सकते हो? किसी ने आपकी प्रशंसा की तो आपको अच्छा लगता है परन्तु यदि किसी ने आपको गालियाँ दी तो?अगर किसी ने आपकी स्तुति करने से आपको अच्छा लगता है तो किसी ने निंदा, आलोचना करने के बाद भी आपने शांत रहना चाहिए। और यह सीखना चाहिए कि कितना ज्यादा दुख मैं सहन (बरदाश्त) कर सकता हूँ। पूना में एक बार मैं (वं. दादाजी) बीमार था और ये सारे सेवक मेरे आसपास थे। उस समय मुझे जो शारीरिक पीडा हो रही थी वह ये सेवक देख नहीं पा रहे थे परन्तु वह तकलीफ मैं कैसे सहन कर रहा था? तो शांत रहने के कारण। इसमें आप दो बातों का अनुभव कर सकते हो – मुझ पर बीमारी का जो कुछ आघात हो रहा था वह मेरे देहिक माध्यम पर हो रहा था और मेरे आत्मिक माध्यम में उस बीमारी को सहन करने का सामर्थ्य इतना अधिक था कि उसके कारण मेरे देहिक शक्ति (शरीर) पर होने वाले आघात मैं सहन कर सका जो ये सेवक देख भी नहीं पा रहे थे। वास्तव में आपमें इतनी सहनशक्ति होना आवश्यक होता है।

दत्त, नाथ, सूफी इन तीनों पंथों का यही धर्म है। उनके काल में भी लोगों ने इन पंथों की निंदा नहीं की थी ऐसा नहीं था परन्तु उन्होंने यह विचार कभी नहीं किया कि प्रशंसा करने वाले अच्छे है और आलोचना करने वाले बुरे है। सभी को समान स्तर पर मानकर ही उन्होंने अपना 'लोककल्याण' का

कार्य पूर्ण किया। 'ऐसे इन 3 महान पंथों की दीक्षा प्राप्त होने का भाग्य आपको गुरुकृपाशीर्वाद से प्राप्त हुआ है और यही आपका महत भाग्य है ऐसा मैं (वं. दादाजी) कहता हूँ। परन्तु इसे आपने कितना निभाना है यह आपका व्यक्तिगत प्रश्न है।' क्योंकि मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण जगत के अनेक अच्छे लाभों से वंचित रहा है और इसके लिए आप भी अपवाद नहीं हो। मैंने अपने गुरु की, गुरुमार्ग की तथा उसमें जो साध्य, सिद्ध, असाध्य अवस्थाऐं है उनकी कितनी भी प्रशंसा की तो भी उस पर विश्वास रखना आप पर निर्भर है। परन्तु इसमें मैं इतना ही बता रहा हूँ कि आपको जो प्राप्त हुआ है वह अनमोल है और वह प्राप्त होने के लिए आपने अत्यंत अल्प प्रयत्न किए है और आगे भी आप पर अत्यंत अल्प ही जिम्मेदारी है। वरना आपको प्राप्त हुई **प्रत्येक दीक्षा सिद्ध करने के लिए कम से कम 12 सालों की अवधि आवश्यक होती है। अब आपको चार दीक्षाऐं प्राप्त हुई है। अगर स्वतंत्र रीति से व्यक्तिशः कुछ साधन सेवा करके ये चार दीक्षाऐं आपको सिद्ध करनी होती तो प्रत्येक दीक्षा के लिए 12 साल इस हिसाब से 12 x 4 = 48 साल लगते।** और दीक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा कब होगी?तो मानो आपकी उम्र के 20वें साल में। मतलब दीक्षा प्राप्त होने तक आप करीबन 70 साल के हो जाते। आज प्रत्येक मनुष्य की आयु साधारणतः 55 से 60 साल की होती है। फिर इतने जीवन में ये दीक्षाऐं आपको प्राप्त होना और नहीं होना दोनों समान ही है क्योंकि अगर आपको दीक्षाऐं प्राप्त हुई और तभी आपकी मृत्यु होने के कारण वे दीक्षाऐं आपके देह के साथ चली गई तो उनका क्या उपयोग हुआ?मतलब वे दीक्षाऐं आपको प्राप्त होने के बाद आप मर जाने के कारण वे आपके देह के साथ चली जाएगी, फिर उनका क्या उपयोग?मतलब यह अवस्था ऐसी ही हुई कि **धोबी का कुत्ता, ना घर का ना घाट का।**

साधक को कोई भी लोककल्याण का कार्य करने के लिए लोकसंग्रह करना होता है व उसके लिए कोई ना कोई माध्यम गुरुमार्गीयों को विचारों में लेना आवश्यक होता है। इसके अनुसार मैंने **लोगों की अड़चनें निवारण करने के माध्यम** का प्रथमतः अंगिकार किया। मतलब श्री परमेश्वर के कृपाशीर्वाद से इस जगत से मेरा जो कुछ कार्यकारण भाव है वह केवल आपका **'निराकरण'** करने का नहीं है, तो आपको **'निराकार'** करने का है। **'निराकरण'** करने का ना होकर **'निराकार'** करने का है मायने क्या? तो आज आप सब के जीवन विविध विषय परत्वे कैसे हुए है?तो आपके जीवन एक विषय से दूसरे विषय में इस तरह से उलझ गए हैं कि उनका कुछ पता ही नहीं है। जैसे धागे की कोई रील यदि सुसंबद्ध रीति से बँधा हुआ होगा तो धागे का एक छोर पकड़कर पूरा रील खुलने तक वह धागा आसानी से लंबा कर सकते है परन्तु अगर उस धागे में गुंजल है तो आपको उसका आरंभ और अंत नहीं मिल सकता। यही आपके जीवन के बारे में है। इसलिए आपके जीवन का आरंभ कहाँ है और अंत कहाँ है यह आपको समझाने के लिए विविध विषयपरत्वे उलझा (गुंजल) हुआ आपका जीवन आपको दिखाने के लिए यह सब **कार्य निराकरण के रूप में लाया है। अब कुछ काल तक निराकरण करने के बाद यथोचित लोकसंग्रह हुआ है। अब आपको मानवीय जीवन की उत्पत्ति मीमांसा के बारे में जो तात्विक भूमिका है वह अलग-अलग अनुभवसिद्ध पद्धति से समझाने का जो 'आदिकारण' है उस कार्य को मैंने आरंभ किया है।**

मेरे जीवन में घटित हुई ये दो घटनाऐं समझ लीजिए, ये घटनाऐं आपके जीवन में भी घटित होगी। इनका अभ्यास करना चाहिए।

1) सन 1952 में जब मैं नौकरी कर रहा था तब मेरी मासिक प्राप्ति केवल रुपये 55 प्रति माह थी और 2) सन 1977 में जब मैंने कामकाज बंद किया तब उसके पहले के 3 महीनों में मेरी मासिक प्राप्ति रुपये 15,000 प्रति माह थी।

अब रुपये 55 प्रति माह यह प्राप्ति मेरे कर्मपरत्वे थी और रुपये 15,000 प्रति माह यह प्राप्ति 'गुरुकृपाशीर्वादपरत्वे' थी। ऐसे समय जीवन का संतुलन बनाए रखने के लिए जागृत रहना आवश्यक होता है। वैसे रुपये 55 प्रति माह यह कुछ ज्यादा प्राप्ति नहीं थी परन्तु उस समय वे मेरे लिए हजार रुपयों से भी अधिक थे। और ऐसे समय मुझे प.पू. बाबा की आज्ञा से 24 घंटों के अंदर नौकरी छोड़नी पड़ी थी। वैसे ही मेरी प्राप्ति जब रुपये 15,000 प्रति माह थी तब भी प.पू. बाबा की आज्ञा से मुझे कामकाज बंद करना पड़ा था। अब आप मुझे यह बताईये कि 'गुरुकृपाशीर्वाद' से रुपये 55 से रुपये 15,000 तक हुई बढ़ोतरी 300 गुणा थी। तो फिर साधारणतः रुपये 15,000 प्रति माह मतलब रुपये 1,80,000 प्रति साल कमाने वाला मनुष्य या वह मनुष्य जिसे साल के रुपये 1,80,000 कमाने का मार्ग अवगत है वह क्या सब कुछ छोड़कर स्वस्थ बैठा रहेगा?तो नही। **परन्तु जब 'गुरुमार्ग में महाकारण दीक्षा प्राप्त होती है तब मनुष्य को ऐहिक ठुकराना पड़ता है।'**

आज आप सब अपने प्रापंचिक (घर गृहस्थी के) प्रश्नों के बारे में मुझे ही पूछते हो। परन्तु मेरे सेवकों के बारे में मुझे यह आत्मविश्वास है कि **ये सब मेरे ही माध्यम है।** मैंने जिन्हें आकार दिया है उन्हें मेरा जो आकार है वही आकार आएगा या दूसरा? तो उन्हें मेरे जैसा ही आकार आएगा। अब इसमें यह परिस्थिती है कि जिन्होंने मुझे केवल स्थूल देह से देखा है वे मेरे इस स्थूल देह को ही 'दादा' करके देखते है। **परन्तु मेरा आंतरिक भाव किस अवस्था को व्याप्त कर रहा है यह आप समझ नहीं पाए हो। इसलिए जब आप मुझे प्रश्न पूछने के प्रयत्न करते हो तब मैं कहता हूँ कि, ''मैं आपसे नहीं मिलूँगा।'' इससे आपके मन में आशंका का भाव निर्माण होता है कि दादाजी मिलने के लिए टाल रहे हैं।** परन्तु यह टालना नहीं है, जैसे क्या आप अपना ऐहिक द्रव्यार्जन टाल सकते हो?तो नहीं। परन्तु जब मेरी मासिक प्राप्ति रुपये 55 प्रति माह थी और मुझ पर मेरी बीबी, मेरा बेटा और मेरा एक भाई इतनी घरगृहस्थी की जिम्मेदारी थी तब उस परिस्थिति में मुझे नौकरी छोड़ने की आज्ञा होते ही मैंने नौकरी छोड़ी थी। वैसे ही आज गोवा से मुंबई तक के सारे कार्यकेंद्र चलाने के लिए मुझे रुपये 4,500 प्रति माह खर्च करने पड़ते है परन्तु जब मुझे कामकाज बंद करने की आज्ञा हुई तो मैंने कामकाज करना बंद किया यानी ऐहिक प्राप्ति करना बंद किया। उस समय मैंने एक क्षण भी यह विचार नहीं किया कि आगे कैसे होगा? या कार्यकेंद्र चलाने के लिए आवश्यक रुपये 4,500 प्रति माह मैं कहाँ से लाऊँगा? या इस अत्यावश्यक रकम की माँग मैंने आप भक्तों से भी नहीं की। क्योंकि **'मेरे सद्‌गुरु पर मेरी परिपूर्ण निष्ठा है।'** उन्होंने मुझे रुपये 55 प्रति माह से रुपये 15,000 प्रति माह प्राप्त करने का सामर्थ्य दिया है। यदि उस समय रुपये 55 मेरे कर्मपरत्वे थे तो भी उसमें मेरी जरूरतें पूरी करने वाले और निभाने वाले मेरे सद्‌गुरु ही थे। इसलिए आज मुझे किसी से एक पैसे की भी अपेक्षा नहीं है कि मेरा यह कार्यकेंद्र चलाने का खर्चा आप करें।

इस संबंध में मेरी यह एक ही इच्छा है कि आप यह समझ लीजिए कि अब मेरी अवस्था **'महाकारण' अवस्था होने के कारण** मैं आपके निराकरण में हाथ नहीं डाल सकता, मैं केवल आपको आशीर्वाद दे सकता हूँ। आपको इन सेवकों से आशीर्वाद प्राप्त होकर उनसे जो मार्गदर्शन हुआ है उससे यथोचित फल आपको प्राप्त हो यह 'कृपाशीर्वाद' मैं आपको दे सकता हूँ और उससे आपको यथोचित फल अवश्य प्राप्त होगा।

मैं आपका निराकरण क्यों नही कर सकता? इस सवाल का जवाब इस प्रकार है– आज इन 7 दिनों में मैंने आपको अनेक अलगअलग विषयों के बारे में जानकारी दी है। परन्तु इसके लिए मैंने कोई नोटस् नहीं निकाले या यहाँ से जाने के बाद आपको कुछ बताना है इसलिए शाम को कुछ पढ़ा भी नहीं

है। इसका अर्थ यह है कि –

मूकं करोति वाचालम् पंगुम् लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वंदे, परमानंद माधवम्।।

अर्थात, गूंगा बोलता है, लंगडा पर्वत पार करता है, इस तरह जिसकी कृपा है उन्हें यानी हे परमानंद माधव आपको मैं वंदन करता हूँ। आपके सामने खड़े होते ही मेरे मुँह द्वारा सरस्वती बोलने लगती है। मैं ऐसा मनुष्य हूँ जिसने अभी तक दासबोध भी नहीं पढ़ा है। मेरी पढ़ाई केवल अंग्रेजी चौथी तक ही हुई है जिसमें मैं तीन बार फेल हुआ हूँ। परन्तु यह जो ज्ञानयज्ञ होता है या ज्ञानयज्ञ करना होता है उसके पहले साधक को अपनी प्रत्येक अवस्था का योग्यअयोग्य (सारअसार) विचार करके ही आगे जाना होता है। पुस्तक रूप में निरूपण करना, गीतायज्ञ करना इसका अर्थ है किसी किताब या ग्रंथ का आधार लेकर उसके बारे में निरूपण करना (समझाना) यानी वह विषय मायने आप नहीं हो। परन्तु अब तक यहाँ इतने सारे विषयों के बारे में जो चर्चा की गई उनमें से कोई भी विषय आपके सामने प्रतिपादन करते समय उसमें शब्द ना मिलने के कारण कोई रूकावट आई है या शब्दों का पुनरूच्चार हुआ है ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। एक बार श्री गुरु को वंदन करके आपके सामने खड़े होने के बाद मैं जिस तत्वज्ञान के बारे में आपको बता रहा हूँ वह समाप्त होने तक उससे संबंधित गंगा बहती रहती है। अब इसके आगे मेरा एकही कर्तव्य है कि आपको ज्ञानी करना तथा उसके साथ आपको साधकसिद्धसाध्य अवस्था प्राप्त कराना। और इसके लिए मुझे जो शक्ति खर्च करनी है वह शक्ति अगर आप, 'मेरी बेटी की शादी कब होगी?' जैसे मामूली प्रश्नों के लिए खर्च करवाओगे तो मैं आपको सज्ञान तथा साधकसिद्ध करने के लिए कैसे पात्र होऊँगा?

इसका अर्थ यह है कि अब आप अपने मन से यह पूछना सीख लीजिए कि मेरे मामूली प्रापंचिक प्रश्नों के लिए मैं कौनसी शक्ति का उपयोग (विनिमय) कर रहा हूँ? आपके ये सवाल आपके लिए इतने विकट (कठिन) क्यों है? वास्तव में वे आपके लिए विकट नहीं है और आपके उन प्रश्नों के लिए मुझे सद्गुरुकृपा से जो अवस्था प्राप्त हुई है उस अवस्था से नीचे की अवस्था में आना मेरे लिए कोई न्यूनता नहीं है **परन्तु उसमें आपका अकल्याण है।** क्योंकि इस तरह से अगर मेरी शक्ति आपके प्रापंचिक प्रश्नों के लिए खर्च हुई तो उस शक्ति से आपको साधकसिद्धसाध्य अवस्था कैसे प्राप्त होगी?

यह स्पष्टीकरण आज खास करके इसलिए किया है कि आप इस विचार से दुखी मत होईये कि हमें वं. दादाजी नहीं मिले और वं. दादाजी मिलते नहीं है ऐसा भी नहीं है। मैं लंदन गया था उसे आज 12 साल हुए है। 12 साल पहले मैं लंदन में जिनके साथ रहता था वे गुरुबंधु यहाँ दो साल पहले आए थे तब उन्होंने कहा कि, ''वं. दादाजी केवल एक ही साल हमारे साथ लंदन में रहे थे परन्तु उनका वह वास्तव्य (निवास) और तब उनके मुँह से निकली हुई वाणी आज 12 सालों के बाद भी वहाँ लंदन में 'कार्य' कर रही है।'' मतलब देखिए कि यहाँ इंडिया में आप लोगों से मिलने का मौका साल में कम से कम दो बार तो आता ही है फिर भी आपको यह लगता है कि वं. दादाजी हमसे नहीं मिलते परन्तु वह लंदन में रहने वाला मनुष्य जो यहाँ से 5,500 मील दूर है उसे वहाँ लंदन में दादाजी नहीं है ऐसा नहीं लगता है। मैं यही आपके पास होकर भी तथा 7 दिन मेरे सानिध्य का लाभ होकर भी आपको लगता है कि दादा हमसे नहीं मिले है। इसका कारण यह है कि आपके मन में जो प्रापंचिक प्रश्न हैं उनको मैंने सुना नहीं इसलिए! मतलब **'दादा' इस माध्यम में जो गुरुतत्व का 'महाकारण' समाया हुआ है वह आपसे छुपाकर नहीं रखा है। उसका प्रभाव इन 7 दिनों में आपने देखा है, उसका अनुभव आपको हुआ है। यह मेरा बड़प्पन नहीं है, यह सद्गुरुलीला है।**

अब आप सब ऑफिसर्स हो व ऑफिस में काम करते हो। अगर आप फलाने ग्रेड के ऑफिसर हो तो क्या आप अपनी नीचे के ग्रेड के काम करते हो?तो नहीं और किसी का काम होगा तो आप उन्हें आपके पी.ए. से मिलकर आने के लिए कहते हो। आप ऐसा क्यों कहते हो? **मतलब आपको अपने चरितार्थ के लिए साधारण सा पद (औहदा) प्राप्त हुआ है तो आप अपना बड़प्पन दिखाते हो परन्तु मुझे तो 'जीवनमुक्ति का अधिकार (औहदा) प्राप्त हुआ है।'** मैंने जन्म लिया है इसलिए आपके मामूली प्रश्नों को सुलझाना यह क्रमप्राप्त है। परन्तु मेरी शक्ति का उपयोग इन मामूली प्रश्नों के लिए करना चाहिए या नहीं यह तय करना आपका काम है।

टापकी जो जन्मतः (उपजत) देहिक अवस्थाऐं है उनका विकास जनकल्याण के लिए करना है इसलिए मुझे मेरी अवस्था का (महाकारण अवस्था का) आस्थापूर्वक विचार करके मेरी जितनी शक्ति संचित करना मुमकिन होगा उतनी संचित करके उसे अगले सम्मेलन में संक्रमित करनी है। शक्ति संक्रमित करनी है मतलब वह आपमें धारण करवानी है। फिर ऐसी परिस्थिति में अगर आपके प्रापंचिक अड़चनों से थोड़ा दूर रहकर मैंने आपको समाधानपूर्वक यह बताया कि, ''कुछ चिंता मत कीजिए, काम हो जाएगा'', तो यह आपके लिए आशीर्वाद है या गाली है? तो यह आशीर्वाद ही है। इसलिए अब आपमें से कोई भी इन 7 दिनों में दादाजी से मिल नहीं सके यह गलतफहमी मन में रखकर यहाँ से मत जाईये।

अब तक आप जिस दादा इस व्यक्ति से मिल रहे थे उससे एक अलग ही अवस्था में अब मैं आपसे मिला हूँ और यह जो अवस्था मुझमें धारण हुई है वह अब तक मेरे परिवार वालों ने भी नहीं देखी है। परन्तु ये तत्व ऐसे होते है कि 24 घंटे साकार रूप में नहीं रहते है तो इसके लिए कोई प्रसंग चाहिए या वह क्षण आना चाहिए या कोई कर्तव्य सामने आना चाहिए होता है। **अब आपको लगता है कि इन 7 दिनों में दादाजी मुझसे व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले क्योंकि मैंने आपके प्रापंचिक सवाल हल नहीं किए और इस विचार से आप दुखी होते हो। यह आपका अज्ञान है इसलिए आप अपने मन को समझाईये और यहाँ से जाते हुए अपने मन में भरपूर आनंद लेकिर जाईये।**

शुभं भवतु।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible